P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

हिन्दी साहित्य में पर्यावरण चेतना "आधुनिक काल के परिप्रेक्ष्य में"

लाल सिंह किरार
अतिथि विद्वान
हिन्दी विभाग,
शा. पी.जी. महाविद्यालय,
गुना, मध्य प्रदेश,
भारत

सारांश

हिन्दी साहित्य के प्रादुभार्य काल से लेकर वर्तमान काल तक को विभिन्न काल खण्डो में विभाजित किया गया जैसे किसी वस्तु पदार्थ या समय के विकास को रेखाकिंत करने के लिए विभिन्न काल खण्डों में विभाजित किया जाता है। ठीक उसी प्रकार हिन्दी साहित्य को भी विभिन्न काल खण्डो के माध्यम से विभाजित किया गया विभाजन की इस प्रक्रिया में सन् 1850ई. से लेकर आज तक के काल खण्ड को आधुनिक हिन्दी साहित्य, जीवन बोध के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द के जन्म को ध्यान में रखते हुए आधुनिक काल की सीमारेखा से शुरुआत मानते हुए रेखांकित किया गया वैसे तो आधुनिक शब्द को पढ़ने व सुनने से पता लगता है। कि इसमें आज के समय या आधुनिकता की बात की जा रही है। इसी आधुनिक को ध्यान में रखकर आधुनिक हिन्दी साहित्य में पर्यावरण चेतना किस प्रकार उपयोगी हो सकती है व हिन्दी साहित्यकारों के द्वारा पर्यावरण संरक्षण, सम्बर्धन जैसे विषयों पर योगदान किया यह प्रश्न हमेशा हमारे सामने आता रहेगा सर्व प्रथम हमें यह जानलेना नितान्त आवश्यक है कि पर्यावरण चेतना या जागरूकता क्या है तथा हिन्दी साहित्य की इसमें क्या भूमिका हो सकती है जिसमें आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों ने अपना कितना योगदान दिया यह जान लेना हमारे लिये परम आवश्यक है। तथा हिन्दी की इसमें व हिन्दी साहित्यकारों के द्वारा पर्यावरण संरक्षण व पर्यावरण जैसे विषय पर क्या योगदान किया

मुख्य शब्द : आधुनिक–नयायुग, साझ–साम, कुदरत–प्रकृति, चेतना–जागृति, बसेरा–रहने का स्थान, पवक–अग्नि, एकरूपता–समदर्शी, निर्भयन जिम्मेदारी, प्रादुर्भाय–प्रगट होना, बखूवी–बहुत अच्छा, गम्भीर–शांतचित्त, जलधि–समुद्र, मर्यादा–सीमा, मनुज–आदमी, सुनामी–प्रलय, संस्कार–अच्छे गुण, अन्तिम–आखरी, सर्जन–खोज, विनाश –नष्ट, निर्माण–बनाना।

प्रस्तावना

सर्वप्रथम हमें यह जान लेना आवश्यक है कि पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ क्या है पर्यावरण दो शब्दो से मिलकर बना है। पर्य+आवरण, जिसका अर्थ होता है परि यानी बाहरी और आवरण माने घेरा अर्थात् बाहरी घेरा जो हमें चारो ओर से घेरे हुऐ है पर्यावरण कहलाता है। साथ ही हिन्दी साहित्य में वैसे तो मानव जगत से सम्बधित कोई विषय ऐसा नही जिस पर हिन्दी साहित्य कारों की दृष्टि न पड़ी हो या उनकी कलम न चली हो, लेकिन फिर भी जब बात पर्यावरण जागरूकता या पर्यावरण चेतना जैसे विषय की आती है तो कहा जा सकता है कि इस विषय में हिन्दी साहित्यकारों ने अपनी कलम के माध्यम से पर्यावरण के विभिन्न तत्वों, प्रकृतिक, प्रेम, नदी जल, जंगल, आकाश, पृथ्वी, पेड, पौधे, पशु, पक्षियों आदि को अपने साहित्य का विषय बनाने में कोई कमी नही छोड़ी, खास कर पर्यावरण चेतना यह एक ऐसा विषय या मुद्दा है जिसके न रहने से मानव जीवन का अस्तित्व स्वयं समाप्त या खत्म हो जाएगा। यदि कहा जाए की पर्यावरण है तो ही मानव है या मानव है, तो ही पर्यावरण है तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। यह एक दूसरे के पूरक है एक के बिना दूसरे के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती है अतः अपने जीवन को बचाए रखने के लिए मानव को पर्यावरण के प्रति जागरूक होना ही पड़ेगा, यह नितान्त आवश्यक है क्योंकि मानव का शरीर जिन्ह पाँच तत्वों से मिलकर बना है वे पर्यावरण के प्रमुख घटक है। पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु यह पाँच तत्व पर्यावरण के प्रमुख घटक है यहां यह बात जो कि सिद्ध हो चुकी है कि मानव और पर्यावरण एक दूसरे के पूरक है अर्थात् एक के बिना दूसरे का कोई महत्व नहीं। फिर बात

आती है आधुनिक हिन्दी साहित्य में पर्यावरण चेतना या जागरूकता पर साहित्यकारो का क्या अवदान रहा, जब किसी भी विषय या मुद्दे पर योगदान की बात आती है। तो हमें यह समझना होता है कि साहित्यकारो द्वारा इस विषय को लेकर कितना प्रयास किया गया या वह कौन–कौन से साहित्यकार है जिन्होंने इस गम्भीर विषय पर अपनी कलम के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया जाता रहा है। वैसे तो जब से मानव ने संगठित जीवन जीना आरम्भ किया है तब से लेकर आज तक जितना भी साहित्य लिखा गया या जिस भाषा में भी लिखा गया उसमें हमेशा से इस गम्भीर विषय पर चिन्तन किया जाता रहा है लेकिन हम बात कर रहे है हिन्दी साहित्य की और साहित्य में भी आधुनिक हिन्दी साहित्य की जैसा की हम जानते है कि आधुनिक हिन्दी साहित्य की शुरुआत ऐसे समय में हुई जब हिन्दुस्तान पराधीन था और भारतीय लोग और साहित्यकार अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्षरत थे जिसमें भारतीय धन सम्पदा, भाषा, या प्राकृतिक साधन स्वयं का वजूद बनाये रखने के लिए किया गया प्रयास भी पर्यावरण का अंग कहा जा सकता है क्योंकि आधुनिक हिन्दी साहित्य का आरम्भ सन् 1850 ई. से माना जाता है ठीक वही समय भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम का है। जिसमें सभी साहित्यकार अपने वजूद को बनाए रखने के लिए कलम के माध्यम से जनता के हृदय में नई ऊर्जा भरने का सार्थक प्रयास कर रहे थे जिसमें सर्वप्रथम नाम आता है आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रथम लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द का जिन्होने अपनी कलम के माध्यम से पर्यावरण को एक नई परिभाषा दी।

सांझ सवेरे पंक्षी सब क्या, कहते है कुछ तेरा है।
हम सब एक दिन उड़ जाएगे, यह दिन चार बसेरा है।।
भारतेन्दु

पर्यावरण चेतना की जब भी बात की जाती है तो ऐसा हो ही नहीं सकता कि आधुनिक हिन्दी साहित्य का जिक्र न हो, क्योंकि आधुनिक हिन्दी साहित्य मे पर्यावरण को बचाए रखने के लिए साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से पर्यावरण के विविध रूपो का वर्णन अपनी भाषा में कर लोगों को जागरुक करने का सफलतम प्रयास किया, जिसमें हजारी प्रसाद द्विवेदी जी द्वारा 'कुटज' में लिखे गये शब्द दृष्टिगत यथाः–

यह धरती मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ इसलिए मैं सदैव इसका सम्मान करता हूँ और मैं धरती माता के प्रति नतमस्तक हूँ।।[2]

इस वाक्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि पर्यावरण चेतना के प्रति हिन्दी साहित्यकार कितना समर्पित है धरती को माँ तथा इसका पुत्र हूँ आदि शब्दों से पता चलता की आधुनिक हिन्दी साहित्य में पर्यावरण जागरूकता को कितनी गम्भीरता के साथ उठाया गया है आधुनिक साहित्यकारों ने पर्यावरण के विभिन्न तत्वों को अपने साहित्य का विषय बनाकर पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण चेतना, जागरूकता तथा मानव जीवन में जल की उपयोगिता आदि विषयों पर खुल कर अपनी लेखनी से लोगों को जागरुक किया जैसे इस गीत के माध्यम से लेखक का संदेश देना चाहता है। यथाः–

''नमन करों तालाबों को
नमन करो इन नदियों को
यदि हम इन्हे बचा पाए तो
ये बचाएगे सदियो को.....
गंगा जैसी पावन धारा
पूरी तरह प्रदूषित है।
आज इसी पल सोच के देखो
जीवन कहाँ सुरक्षित है?[3]

इस गीत के माध्यम से गीतकार ने तालाबों व नदियों को बचाए रखने तथा नमन करने की मानव समुदाय को सलाह दी है साथ ही चेतावनी भी दी और कहा है कि गंगा जैसी पावन धारा पूरी तरह प्रदूषित है तथा यदि हमने इसको नही बचाया तो हमारा जीवन सुरक्षित नही, यदि हमें अपना जीवन सुरक्षित रखना है तो इनको बचाना ही होगा आधुनिक साहित्य में पर्यावरण के प्रत्येक तत्व को गम्भीरता के साथ समाहित कर उस पर मंथन किया गया उसके बाद साहित्यकारों ने अपनी कलम के द्वारा लोगों के समक्ष प्रस्तुत कर पर्यावरण के महत्व एवं उसकी उपयोगिता को प्रस्तुत किया जैसे ऋषभदेव शर्मा जी वाक्य से स्पष्ट होता है यथा

हैलो मनुष्य
मैं आकाश हूँ
कल सृजन था निर्माण था
आज प्रलाय हूँ विनाश हूँ
मेरी छाती में जो छेद हो गये है काले काले
वे तुम्हारे भालों के घाव है
यह कभी नहीं भरने वाले[4]

अर्थात् इसमें साहित्यकार द्वारा पर्यावरण को हानि पहुँचाने से क्या प्रभाव पड़ेगा यह आकाश के माध्यम से लेखक बताना चाहता है। कि आकाश मनुष्य से कहता है कि कल में सृजनकर्ता या निर्माण करता था लेकिन मानव की पर्यावरण के प्रति संवेदनहीनता के कारण में प्रलय और विनाशकारी हूँ। इस विनाश की भरपाई नहीं हो सकती जो हानि पर्यावरण को पहुँचाई जा रही उस के उत्तरदायी तुमहो, केवल तुम! तथा इस विनाश की कभी भरपाई नहीं की जा सकती ! आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों मे पर्यावरण चेतना को मुखर करने वाले कवियों में मैथलीशरण गुप्त, मुकुटधर पाण्डे, सुमित्रानन्द पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, महादेव वर्मा, नन्द दुलारे वाजपेई, हरिवंश राय बच्चन, अज्ञेय, माखनलाल चतुर्वेदी, नागार्जुन, महादेवी वर्मा भावनी प्रसाद मिश्र, भगवती चरण वर्मा इत्यादि कवियों ने प्रकृति के विभिन्न रूपों को अपने साहित्य के माध्यम से जन समुदाय के समझ प्रस्तुत कर पर्यावरण जागरूकता के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित किया जिसमें जय शंकर प्रसाद ने अपने महाकाव्य कामायनी में प्रकृति के विविध रूपों का वर्णन कर मानव को सोचनें पर विवश कर दिया यहाँ कामायनी का यह वाक्य दृष्टिगत है।

''प्रकृति रही दुर्जेन, पराजित, हम सब भूलों थे मद में।
भोले थे, हां तिरते केवल सब, बिलासिता के मंद में।
वें सब डूबे–डूबे उनका बिभव, बन गया पारावार,

उमड़ रहा था देव सुखों पर दुःख जलाधि का नाद
अपार।।[5]

आधुनिक हिन्दी साहित्य, मानव और पर्यावरण में तारतम्य स्थापित कर, उसके उचित उपयोग की संतुष्टि करता है क्योंकि वह भली–भाँती जानता है कि मानव का सम्पूर्ण अस्तित्व पर्यावरण पर निर्भर है वह अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पूर्ण रूप से पर्यावरण पर निर्भर है। अतः वह पर्यावरण नष्ट कर स्वयं को सुरक्षित नहीं रख सकता इसीलिए साहित्य मनुष्य को पर्यावरण के प्रति अनुराग करना सिखाता है तथा उनका संरक्षण व संवर्धन करने पर बल देता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में पर्यावरण के प्रमुख घटक वनों का महत्वपूर्ण वर्णन किया गया है इतना ही नहीं विश्व की प्रथम कविता या महाकाव्य की रचना वन में हुई यदि यह कहा जाए की भारतीय संस्कृति ही वन संस्कृति है तो कोई अतिशोक्ति न होगी परन्तु आज मनुष्य अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर, अपनी उसी संस्कृति को नष्ट कर रहा है। स्वार्थवश वनो की कटाई दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जो एक गंभीर समस्या है इस पर समय रहते ध्यान नहीं दिया तो इसका विकराल रूप हमें देखने को मिलेगा। इसी बात को ध्यान में रखते हुए नरेश अग्रवाल जी ने वृक्षों के अन्तिम संस्कार की संज्ञा दी जो यहां दृष्टिगत है यथा

''मैं गुजर रहा था
अपनें चिर परिचित मैदान से।
एका एक चीख सुनी
जे मेरे प्रिय पेड़ की थी
कुछ लोग खड़े थे
बड़ी–बड़ी कुल्हाड़ियाँ लिये
वे काट चुके थे इसकें हाथ
अव पाँव काटने वाले थे
हम लोग लाश उठा रहे है
अन्तिम संस्कार भी करा देंगे
तुम राख ले जाना''।।[6]

इसी प्रकार हिन्दी साहित्य में प्रयोगवाद के प्रवर्तक अज्ञेय जी के काव्य में मानव और पर्यावरण के अन्तः सम्बन्धों की झलक देखी जा सकती है उन्होंने अपनी कविता ''असाध्य वीणा'' में मनुष्य को अंह का त्याग करने तथा आत्मानुभूति प्राप्त करने की प्रेरणा दी है क्योंकि आत्मानुभूति द्वारा ही मनुष्य स्वयं को अपने सीमित दायरे व सोच से बाहर निकाल कर सम्पूर्ण विश्व के साथ सम्मिलित कर सकता है इस प्रकार वह मानव को अंह से मुक्ति मार्ग दिखाकर व मानव को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बना कर पर्यावरण संरक्षण के पथ पर अग्रसर है

पर्यावरण चेतना के प्रति आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों ने सदा से अपने काव्य का विषय बनाया है जिसमें पर्यावरण संरक्षण हो, पानी का महत्व हो, जल, जंगल जमीन की बात हो या वायु, पेड़, नदियां, तालाब, समुद्र, आदि साहित्यकरों ने अपनी कलम के माध्यम से लोगों में जागरूकता लाने का हर संभव प्रयास किया जाता रहा है जिसमें डॉ. लक्ष्मीनारायण बुनकर जी की 'बुनकर सतसई' में पर्यावरण जागरुक पर लिखे कुछ दोहे दृष्टिगत है यथाः–

1. देती है कुदरत हमें, पानी पावक अन्न।
रह पाते है हम तभी स्वस्थ सुखी सम्पन्न।।
क्र. 462
2. मर्यादा तोड़ी जलधि, नहीं शांत गम्भीर।
आज सुनामी लहरने, मन को किया अधीर।।
क्र. 552
3. छोटे मोटे वृक्ष से, क्यों करता पहचान
छांह पकड़ वट वृक्ष की, उतरे सभी थकान।
क्र. 611
4. प्रकृति मनुज की सहचरी, देती सुख आनन्द।
सचमुच किसे न मोहता, पवन सुगंधित मंद।।
क्र. 680 7

अध्ययन का उददेश्य

जब से पृथ्वी पर मानव का प्रादुर्भाव हुआ है तब से लेकर आज तक पर्यावरण असन्तुलन मानव के लिये एक चुनौती बना हुआ है जिसका परिणाम यह है कि पृथ्वी के हजारों साल के इतिहास में नित नये परिवर्तन देखे जाते रहे है किन्तु जब मानव सभ्यता का विकास हुआ है तब से पर्यावरण के प्रति जागरूक नहीं हुए किन्तु जैसे – जैसे मानव ने विकास के नये आयाम को छूना प्रारंभ किया वैसे – वैसे उसे पर्यावरण के प्रति जागरूक होने के आवश्यकता महसूस होने लगी और उसे प्रकृतिक घटनाओं द्वारा यह समझते हुए देर नहीं लगी कि उसे अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिये पर्यावरण को स्वच्छ रखना अत्यंत आवश्यक है इसके बिना पृथ्वी पर मानव का जीवन सम्भव नहीं है। वह अपना अस्तित्व बनाए रखे इसलिये नित नये प्रयास करता रहा है और करता रहेगा। जिसका माध्यम कोई भी हो जैसे वैज्ञानिक नई तकनीकी लाकर साहित्यकार अपने साहित्य का विषय बनाकर समाज से भी समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाकर पर्यावरण इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए मेरे जहन में विचार आया कि क्यों न आधुनिक हिन्दी साहित्य में पर्यावरण चेतना पर शोध पत्र लिखकर जन समुदाय के समक्ष्य हिन्दी साहित्य के कुछ अंशो को प्रस्तुत किया जाये जिसमें आधुनिक हिन्दी साहित्य में पर्यावरण चेतना पर लिखे गये भाग को अपने शोध पत्र के माध्यम से जन मानस को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने का मेरा छोटा सा प्रयास है

निष्कर्ष

आधुनिक हिन्दी साहित्य में पर्यावरण चेतना को विषय बनाकर सहित्यकारों ने अपनी कलम के द्वारा मानव समुदाय को जागरुक करने का जो सार्थक प्रयास किया वह अनुकरणीय है क्योंकि यह मानव से जुड़ा हुआ होने के कारण साहित्यकारों की और भी नैतिक जिम्मेदारी बनती कि जिसकों उन्होंने बखूवी पूरी ईमानदारी व एकरूपता के साथ निर्भयन किया और यही कारण रहा है कि पर्यावरण के प्रत्येक घटक पर हिन्दी साहित्य या आधुनिक हिन्दी साहित्य में जो साहित्य उपलब्ध होता है वह अन्यत्र शायद ही उपलब्ध हो।

''पानी व्यर्थ बहाओगे, फिर कहां से पाओगे''।

अंत टिप्पणी

1. *हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली– हजारी प्रसाद ''कुन्ज''अंक–9 पृष्ट क्र. 32 राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली*
2. *नारी विमर्श– शा. पी.जी. कॉलेज गुना–आवाहन गीत–पृष्ट क्र. 143 सम्पादक डॉ. लक्ष्मीनारायन बुनकर*
3. *सागरिका पत्रिका– पृष्ठ क्र.–52 ''में आकाश बोल रहा हूँ''। ऋषभदेव शर्मा*
4. *कामायनी, जयशंकर प्रसाद– प्रथम संस्करण–1995 पृष्ठ क्र. 02*
5. *नरेश अग्रवाल माध्यम सहस्त्राब्दि, अंक –9, जनवरी–मार्च पृष्ठ क्र. 80 सम्पादक डॉ. सत्यप्रकाश मिश्रा*
6. *बुनकर सतसई, दोहा क्र. 462, 552, 611, 680, लेखक – डॉ. लक्ष्मीनारायण बुनकर,*
7. *प्रकाशन– ग्रंथ भारतीय, नई दिल्ली।*